

मन्त्रोपाध्यायः सनसेकासंज्ञादि ॥ ३ ॥ वास

नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय

2577

ॐ नमो गानसाय नमः गमविन्दं गमकुलानन्दः
गमपालः गमपि व नृहं गमवर्धरः रतं धिः तु वन्दे
गममणिप्रियं ॥१॥ पिता वनं पद्मनाहं पत्रमादि
पुरुषात्तमं ॥ पवित्रं पत्रमनन्दः तु वन्दे पत्रम्यसौ
नं ॥२॥ नारायणं निरंकारं नरविरतरोत्तमं ॥ न
नसिंहं नागनाथं वः तु वन्दे नरकांतक ॥३॥ रागवं
रामचंद्रस्यः रामनारि रमं पति ॥ राजिभक्तो वनं रमं
तु वन्दे रघुनन्दनं ॥४॥ बाहुना विस्वरूपं वः वासुदेव

रविधलं ॥ विष्णुविस्वसोरं व्यासः तु वन्दे वेदवल्ल
भं ॥५॥ दामोदरं दिव्यासिंहं दयालं वननाथकं
दैत्यारिवदेयसं तु वन्दे देवकिस्तुतं ॥६॥ मोरारिमा
धवस्तुतः सकुन्दं सुस्तीमिदं नं ॥ भुजकेसमाहावाह
तु वन्दे मधुसोधरं ॥७॥ केसवं कबलाकांतः का
मेसं कबलस्तु संप्रियं ॥ कौमोदिकं धरं कृष्णः तु
वन्दे कौरातकं ॥ भोधरं भो नानन्दः भुतदं भुत
नाथकं ॥ भौने कं भुजकेसः तु वन्दे वभनासनं ॥

शिवश्रीगोविन्दगितापिलकवीनसायापनासधूरियवनमो

जना जने जगं नाथः जग जादे विना सत् ॥ ज स
द ग्री ज त जो तिः तु वन्दे जल सायनं ॥ व तु भु
जं वि ता नं दंः वा नु र मूल मर्दन ॥ व रा व रं ग ति दे
वंः तु वन्दे व कु पा नि नं ॥ ११ ॥ श्रि क रं श्रि ना थं व श्रि
च रं श्रि व रं पु दं ॥ सि व त स्य लब्धि सि हः तु व दे श्रि सो
रे स्वरं ॥ १२ ॥ जो जे सो रं ज गं ना थः ज स दा नं द दा य कं
॥ ज मु ना ज लो क लो लः तु वन्दे ज चु ना य कं ॥ १३ ॥
सा लि ग्रा म सि ला सु चंः सं ष व कृ पि सो ध न ॥

सु रा सुर स दा सि भ्यः तु वन्दे सा चु ज्ञ त भं ॥ त्री वि
कृ सं त्र यो मु क्तिः श्र ति वि चं पा प ना स न ॥ त्रि थ
लि त्रि थ रा जि द्रः तु वन्दे तु ल सि प्रि य ॥ लि ल य
ची त भु भा रं लो के स्वरं रि लब्धि दंः तु वन्दे ल द्यो
म न प्रि यंः प्र न धं प्र स धं प्र धंः तु वन्दे मु ध
ना स न ॥ १४ ॥ ह रि स्त ह रि ना थं वः ह रि ना थं
ह रि प्रि यंः ह ला लु चं सु दा लु चंः तु वन्दे ह लु ना य
कं ॥ १५ ॥ इ ति श्रि ह रि ना म सा धितं मा लि त्रि दं द पा
प ना स नं व ल रा जि द्र कं थ पा जे स म पु र्न स मा प्र ह सु भ

१ श्री गुरु नमः ॥ श्री गुरु नमः ॥ श्री गुरु नमः ॥ श्री गुरु नमः ॥
श्री ३ संलेश्वरि नमः ॥ प्रथमसुखं नृपलसुखं नृप
क्षः इति यस्मिन् नृः गविंदयः ॥ नृपि यस्मिन् नृः ग
अलिमहं नृः यकादसिः जगवंधय ॥ १ ॥ सफ
प्रतिमाहः उतिमनामः आदि नृः अत्र नृः कयः
नृः हि नृः सः उतिमनामः आदि नृः अत्र नृः कयः
ना अत्र नृः कय ॥ २ ॥ सति नृः सः कनहसुवष
अः कंति नृः कः कितः मातयः गृहगृहः मंगनः
वाजिगृवाजनिः गृहगृहः सामनृः कय ॥ ३ ॥

श्रुपत्रपमांगतः दृगियस्मिन् नृः सत्यसंरा अत्रिः
नात्रियः प्रपुषविगुः धमांगतजाकाः सफ १२ कितु
क्षत्रात्रिया ॥ ४ ॥ विष्णुप्रतिर्हः नावद्रावाः अर्घप
दात्रयकिर्नयः कत्रियदंदः तत्र नृः उदकत्रिनाः
नात्रद्रासिकदिर्नय ॥ ५ ॥ विष्णुपात्राय नः यत्नमग
रुद्रा निः विनगिस्त्रयकमात्रयः दृहकनत्रात्रिः
श्रीहात्रात्राः कअनवक्रउधत्रिय ॥ ६ ॥ नृः नृः अत्रिः
पथं नत्रनादिः वक्रयकादसिनात्रायः वहविधिः

अः हय नृप नंदः अथ च तम कि का जय ॥ १ ॥ यहि
अ नृ नी ना ज्ञाः ता ग वा ता अः वा न हा अं मि क वा नियः
अ नृ पा नि हय ह सि का व न थः य का द सि वृ ग त्रा नि
य ॥ ६ ॥ यहि स नृ नी ना गमः अ वि धिः किं नाः म कि
ना ग अं अः दि पा अ थः अ म पृ त्रि अं न्यः का हि नृ ना अः
ज म ना न हः वि न र्वा यि य ॥ ७ ॥ नृ नृ ग ज म ताः म हि
वा म गम अः व न ल पि तां व ना क थः स व द् व अ नाः
जा यि पृ का नाः वि धि य नृ न व अ थ य ॥ १० ॥ व ह

व वि वृ द्वाः अ हि वृ द्वा अः वं थ ह अ पृ त्रि ज्ञा यिः
ज स वि धि वृ द्वाः वृ न न कृ पा नाः अ वि धि क न ल
उ पा यि य ॥ ११ ॥ ज व हि वृ द्वाः मा हा नि कि द्वाः अ ति
य हं नृ त्रि वृ ना त्रि यः वं द्र व द निः क अ ल द नः ना
व निः अ ति य व नृ न कृ मा त्रि य ॥ १२ ॥ अ नृ नृ अ
नृ सिः वा न क लि य मं द न ग र नृ ग थि यः मा हि वि
वि थ क ना च क वा न थः नृ प मा ग नृ य क ज्ञा नि यः
॥ १३ ॥ दृ अ का न नः अ ति य वि नृ नृ नृ ग म अ नृ य व म

रागयः क न ह क अ रु कः ह ल ह व ह विधिः अति
य ये व म स्व हा यि य ॥ १४ ॥ नृपत्रयभा गागः वत्रल
अदि ताः मंद तप ह व नः जा मियः अथ तत्रा
ति त्र वि धि या अत्रः नि त्र ध वि ध र्न या यि य ॥
॥ १५ ॥ त्रव हिः मा ह निः स य क ता अः अं न त वि
क म ह स यः अ त य गि व द्वाः म म दि वा क न र्ग
नि अ न द ग व स य ॥ १६ ॥ अस्त्र क हः व र त म य
निः स ग ल व स त न जा यि यः त व हि अ र्श थ्याः

प ह व न त्रा यि यः मंद क हा नि त्र ता नि य ॥ १७ ॥
स ग वि ता सः क ता दि न वि तः त्रि ता मा ह निः अ
ति स यि यः पृ त्र ध म्भा गागः त्रा यि य क ताः या ग य क
द स्र अ यि य ॥ १८ ॥ व ह वि धि स्र अः ह य नृ प न
द नः अर्थ ध त मः म कि का त्रा यः य दि स्र निः मा
ह निः अति वि त्र ता अलिः स्र मि प न ग म्भा यि
य ॥ १९ ॥ उ धि का ता त्राः मा हा नि म ना अ लः ला अ न
वि धि क उ या यि यः मा ह नि वा अः मं दि त्र वा क

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥
गः ॥ क ता दि लि नाः वा त लि भा ह । नि ता नि य
कि ह ति वा सः ॥ य त्र हा ता जाः । के नि त्र य त्र का मा
यि य ॥ २१ ॥ ता नि सै रा अ लिः ॥ य व त्र द्र यः ॥ य द्र य
हा ली य हा त यः ॥ सै स य य रः ॥ य मा गा त ता जाः
जा यि य द्र ल नि त्र ता । नि य ॥ २२ ॥ स य सै रा अ
त्रिः ॥ स व ग्न न । आ गा त्रिः ॥ त्र य आ दि रु वा । नि यः ॥ थि
॥ थि त्र न । दि त्रि उ नूः ॥ ता व न ता । नि कः ॥ वा त लिः

पु म । कि ता । नि य ॥ २३ ॥ आ य त्र सि त्र वं त्रः ॥ त्र ह द्र
मिः ॥ न ता आ हाः ॥ ह ति वा स यः ॥ ता त्र क मा त्र ध त्र
मा गा तः ॥ य द्र निः ॥ य त्र वा तः ॥ २४ ॥ वा य क्क वा ग यः
॥ २५ ॥ यि तां ॥ २६ ॥ ता का त नः ॥ त्रि अ व द्र य आः ॥ न
य जाः ॥ ह लि वा स यः ॥ थि त्र न । दि त्रि उ नूः ॥ ता व

त्रा। यः प न त प न त म। य य न न हो त्रा भा
 विः त्रा त हा मा। त्रः ध न प्पा ग त के न व। त्र
 ॥ २९ ॥ आ त्र न क च त्रा क न व। त्रा त्र नः मा वि
 त्र अलः म हा। त्रियः स्व न त्र ज्ञ त्र नः म त्र क पूर्व
 त्रिः कृ त्रा न त्रा कि त्रा। य य ॥ ३० ॥ ध ल म्पा ग
 त्रः ग य ह पू कृ वि शान वि। य च त्रा त्र ह ड

तं शायियः कहं शा व्य चना कउ नः पत्रिका
नाः कं ह्य च तह अ का सयः ॥३१॥ क नः कं उ नः
ध लि माहि धिः उ था अ नः स्व हि उ पा स तह्यः
ह लि वा स यः स ग न न ग त्रि मः हा व जा क ता
अः व ता न हि पा अ ल का हि य ॥३२॥ क न हः
ग अ न नि कि नाः रा ग न ह उ हि द्र यियः क न ध
वि ग अ लि नि जा यि उ था अः व्य च ना च नः अ का य
२ ग अ त्रि

॥३३॥ ध न्य का द हिः अ न न त व ध अ ह न ह
त्रि वा स यः ग व जा यि ता जा ख न उ पा नाः स ग अ
लि क न य त्र य ॥३४॥ पा न जा स क ताः अ म न
ह य ताः अ ज ध ना थ मू ता नि यः ना म र क हि
वा न ह वा ताः मू कि य दा न थ का म य ॥३५॥ जाल
ग्र सि त य नः ख न प्र हा ता हा न ध नः रु ग वा न
यः स ल रु यिः ह त्रि क हि अ ह वा निः ध न्य यि

गो ३२ गत्रा निय ॥ ३॥ ॥ दे अत्रि विष्कः पूष्य वत्र
सा अः पत्र गसा रंगया नियः संष वक्र गदाय
द्व रं यः दः यिता वत्र वसु ग ज धू रायिय ॥ ३७ ॥
सि वन नद्व व सुः नत्र दू कि चूर्द म गा अयः
सु क्क अर्क (५) वत्र विमा नाः गंधूर्व व अत्र वादा
ता यि। यः ^{॥ ३८ ॥} पुं क न गः सग ल न ग। त्रि नः विष्क
प्रति देह वा सुय ॥ ३९ ॥ यका दसि नि सि दि न मं

गत्र गम अयः निष्कयः अत्रा यत्रिः द्य उ वा सु
यः ज्ञा न ग र ध त्र निः य अ न या निः ग ग न रान् अ
न रं ड य ॥ ४० ॥ रा ज्ञा प्रा फु क्क र गः रा रू ना ना
य न कृष्कः ग विं ड यः ज्ञा य हि य का द सि नि सि
दि न मं गत्र गम अयः निष्कय अत्रा यत्रि वा सुयः
मं गत्र र ग अ न विष्कः मं गत्र र ग र ध ज्ञः मं गत्रः पू
द त्रि का कः मं गत्र म ध सु द नः शरः सु भा फः मि नि व ॥ ४१ ॥
सु क्र या ट वा याः सि ध य का र नः व त्रि व ध न चा या र नः ध मं गत्र वा न साः
पा य ना सु र ॥ अ र नः ध आ र यि का द सि मं गत्र वा न साः पा य द न र ॥ ४२ ॥

नमः श्री धर्मराजाय ॥ रुद्रा गच्छे निरुलाकः क्व स्रवानायत्रि
 गंजं तां ब्रह्म स्रवा ब्रनाचात्रिः ब्रानियंनत्रकात्रयत् ॥ धर्मरा
 जास्थनः जर्मद्रुगपानिहाडाः रुद्रा गच्छे यनिमृ एला कसवनिः
 विस्वचकर्मया कक्षः ह्यमप्यजः ब्रह्म स्रवः दुष्टयापियनिह
 याजः नत्रकसगयमात् ॥ १ ॥ रिथो उवाचः किं दुःपः निहंयावैः नः
 क्व स्रवानाचः ब्रह्म स्रवाना कथं पुरः तदहं (अ) तुमिच्छा मिताय
 क्व हि ववहग ॥ रुद्रा मिताः जय निस्थनः क्व ब्रह्म वधायमसियाः ब्र
 ह्म वधायमसियाः जय निस्थनमस्ययाः इतरथात्रस्थनः ब्रह्माप
 भन्नस्यमात् ॥ २ ॥ धर्मराजा वाच ॥ पुनित्वमागृह्यस्यः सत्यवादि
 सदानत्रः सिवरविष्णु सदारुकिः दृष्टा वक्षु नमित्रयत् ॥ धर्मराजा

स्थन जर्मद्रु कडाः रुद्रा मिता जनय निवृत्ताश्च वधायस ॥ सत्यसं
 तुः क्वा कक्षः पुत्रवः माहा दवतकः विष्णु सव्यः रु किं याकः धय
 निः द्रुपनिस्थनः मिवानत्रयमदुव ॥ कथित्रायत्रय (वेनुः) (अमय
 गृहत्रपनः निर्यकर्म कृतं जाय्यः इच्छा वक्षु नमित्रयत् ॥ सिधिसा
 नहिस्तवः सा सउषिन्नः वथिनाजः क्रिथ कर्मया कः जायया कक्षः इ
 पानिस्थनः मिवानत्रयमप्यज ॥ ३ ॥ द्वात्रिकागिथः गदकिगिथः वग
 वसामयानावः समस्त दंजपूजायाकः (अ) निगमः पूजायाकः समस्त
 दंजपूजाः मुहिनामवाकक्षः इनमिवानमिवानस्यमप्यव ॥ ४ ॥
 गितवादकृतां (अ) तुलसिकक्षु वं नः सं सवक कृतं दहः इच्छा
 वक्षु नमित्रयत् ॥ मयहानावः सिंथाजावः तुलसिमानानकसायः

॥ सकल किं या कर्त्तुं संघः वक्रयाः विद्रुद्रसदयकं वाङ्मनः
 वयनिस्तनः मिशानश्च यमयव ॥ १॥ एतस्मिन्मि कथार्यः कृया
 कृष्ण पुजनः म विन्द मनसा गमयः इष्ट वक्रन मित्रय ॥ एतस्मिन्मि
 याजः विद्रुद्रया या कः ॥ म विन्द पु मत्रयः क्रिय नामका स्य द्रवन्तः
 वयनिस्तनः मिशानश्च यमयव ॥ २॥ अग्निहा गृह यत्यः वदसा
 गृः पुनानथाः गिकानं च दग संघः इष्ट वक्रन मित्रय ॥ सुनानं वृसः
 अग्निहा गृह म कर्म या च कावः वदः नाना सा सुः पुनानः या थ या च कृ
 मः वयनिस्तन मिशानश्च यमयव ॥ इष्ट वक्रः गिकानं संघ या कर्त्तुं
 गवना ज या थ या कर्त्तुं गले स म्मि पुजा या कः गह शु नामः वय
 मः वयनिस्तन मिशानश्च यमयव ॥ ४॥ उदा क ग वनं वंघः कर्त्तुं

वामस्मिन्मि कर्त्तुं क स व वा नि वा य्य संघः इष्ट वक्रन मित्रय ॥ उदा
 कनः क स या ग सः सुयं यजः का वा यं यवः भाग स ग यं यं वः सि व स म त्रयः
 विद्रुद्र पु मत्रयं जा वन्तः वयनिस्तन मिशानश्च यमयव ॥ ६॥ जम इर्गा वा
 चः स्मा कं व र द या ध मः गद हं कृ हि म पु गृह वा अ का न नः इ ग
 स्तान म वा सि तं ॥ जम दु ग न द्रा याः स ध म्म राजा सः जय नि सः व न श
 नः व न य नः जय नि वा स या य थ स म स याः अग्नि दय क मा त्र ॥ १०॥
 ध म्म ना ज वा वः मु क्त कं गी त थ ना निः वि वा दं क न ह रु व त म रु कः क
 म न र्त्त कः ॥ ते ते वि द्म म इ न स कृ ह न र्त्त कः ॥ ॥ ध म्म दु र्त्तः राजा स
 नः जम इ र्गा वा स या य थ स क डः मि सा जनः स कृ ह न ग वः अ या कः भा
 त सः स्तान म वृ यः म द्वा व क्त या कः वयनिस्तन वा स या ज ध कं क ड ॥
 ॥ ॥ अग्नि न शु क वृ द्धुः ग व वा व रु व रु तः महि सि व न कि ष्

गणविश्वामदुगय ॥१२॥ य० ग० गृन्नु या (श्वः) जर्म गा गा वं किं
मं: सर्व या य: विनिमुक्तं: जमत्रा कं नगम्य ॥१३॥ जमगि गययु
क्त या: ड डक्तया: सक्त या य भाक: जमत्रा ग अन्यममत्र ॥१३॥ गामदा
हिसू या पिय: विषा नन दाहकं: यस्तुत्रा निमवा प्रा गि: अनियंनत
कात्रयं ॥ (श्व: मा सा: दुख वियाव गवक्तं: न थुल्य ड हवस: तं ड सनक
न शवक्तं: मिथाल शवक्तं: य शुजा ति: गमन शवक्तं: थयिं ड क्तं ह
याव: नत्रक सगयमात्र ॥१४॥ पितरं वप त्रिया गि: न श वा शा जन
रु था: रा श्य युग: वयु र्या गि: अनियंनत कात्रयं ॥ ववु गात्रा
न: वा ड क्त: रा श्य युग: थयनि गात्रा व गवक्तं: थयनि ह्याव: नत्र
क सगयमात्र ॥१५॥ सुयदन्य युष्म ड व: यदिरु का हवा सन: यव्यु
न थु मं कृत्या: आद्रियंनत कात्रयं ॥ व वरु स: क य या क क्तं ह

त्रिवा सत्रात्र: ग गा यव कात्रवा त्र: अन्न नवक्त: सतिगमनया कक्तं: व
यनि ह्या ज: नत्रक सगयमात्र ॥१६॥ अमान्य व दसा स्ति नि: अमान्य द
वगिथ क: वाक्तन अमान (आ थु: अनियंनत कात्रयं ॥ द ज सा रु:
व द: गिथ वाक्तन: सा थु रा मा समया कक्त: ह्या ज नत्रक सगयमात्र ॥१७॥
अमाकं व त्र पिय ड: क हिस्य पुर गृ ह वा: अविनन क ग खाना निया
मिगा ॥ जमडु गन: व म्म राजा सक्त ड ड: श व म्म राजा स: जयनि स: व
ल शत्रं ड त्र या त्र: जयनि वा सया य थ स म सिया: आ ग्मा दय क माल ॥१८॥
व म्म राजा ज वा व: मुक्त क सि: रु था ना त्रि: विवा द: कल हं रु थ: मक्त क
क म ग्म क्त: गणविश्वामदुगय ॥ व म्म राजा सन: जमडु गय निवा
सया य थ य क ज: मिता जन: सुरु ह ग वक्त या क: द्विथ ड ह्या य य व थ
यस: सानन ड य म ड ज थ यस: थ थ ड थ यस: थ यनि स्यन: वा स या न